chapter - 1

संसाधन एवं विकास

PAGE NO.
DATE: / /

संसाधन — हमारे पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रयोग की जा सकती है संसाधन कहलाती है।
जैसे - कोयला, पेट्रोल, धूप, वायु, जल

संसाधन के प्रकार

1. उत्पत्ति के आधार पर —

(i) जैव संसाधन — इन संसाधनो की प्राप्ति जीवो से होती है।
जैसे - वनस्पति, पशु

(ii) अजैव संसाधन — वे संसाधन जो निर्जीव वस्तुओं से बने होते है।
जैसे - चट्टाने, धातुएँ

2. समाप्यता के आधार पर —

(i) नवीकरण योग्य संसाधन — वे संसाधन जिन्हे भौतिक या रासायनिक प्रक्रियाओं या यंत्रो द्वारा दोबारा बनाया जा सकता है।
जैसे — सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा

https://parikshasolutions.blogspot.com
www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

(ii) अनवीकरण योग्य संसाधन — इन संसाधनो को बनने में बहुत लम्बा समय लग जाता है। खनिज और जीवाश्म ईंधन इसके उदाहरण है। ये संसाधन एक बार प्रयोग के बाद ही खत्म हो जाते है।
उदा० — कोयला, पेट्रोल

3. स्वामित्व के आधार पर —

(i) व्यक्तिगत संसाधन — ये निजी व्यक्तियों के स्वामित्व में होते है, बहुत से किसानों के पास सरकार द्वारा दी गई भूमि होती है। बदले में वे लगान चुकाते है। शहरों में लोग भूमि, घर एवं अन्य जायदाद के मालिक होते है।

(ii) सामुदायिक स्वामित्व — ये संसाधन समुदाय के सभी लोगो को उपलब्ध होते है। जैसे — शमशान भूमि, तालाब, नदी

(iii) राष्ट्रीय संसाधन — ऐसे संसाधन जिस पर देश की सरकार का स्वामित्व होता है। देश की सरकार को अधिकार है कि वह व्यक्तिगत ससाधनों पर अधिग्रहण कर सकती है।
उदा० — सारे खनिज, जल संसाधन, वन, रेल

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

(iv) अंतर्राष्ट्रीय संसाधन — तटरेखा से 200 नॉटी. की दूरी से परे खुले महासागरीय संसाधनों को अंतर्राष्ट्रीय संसाधन कहा जाता है।
इनका उपयोग अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सहमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

5. विकास के स्तर के आधार पर —

(i) संभावी संसाधन — वे संसाधन जो किसी प्रदेश में विद्यमान तो होते है पर इनका उपयोग नहीं किया गया है।
उदा० — भारत के पश्चिम भाग राजस्थान और गुजरात में सौर ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा संसाधनों की बहुत संभावना है पर उनका सही से उपयोग नहीं हुआ।

(ii) विकसित संसाधन — वे संसाधन जिनका सर्वेक्षण किया जा चुका है और उनके उपयोग की माता निर्धारित की जा चुकी है।

(iii) भंडार — पर्यावरण में उपलब्ध वे पदार्थ जो मानव की आवश्यकताओं की पूर्ती कर सकते है लेकिन प्रौद्योगिकी के अभाव में ये पहुंच से बाहर है।
उदा० — जल यो ज्वलनशील गैसों का यौगिक है, यह ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत बन सकता है। पर ऐसा करने के लिए हमारे पास तकनीकी ज्ञान नहीं है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

(iv) संचित कोष — यह भंडार का ही हिस्सा है, तकनीक द्वारा इन्हें प्रयोग में लाया जा सकता है, परन्तु इनका उपयोग अभी शुरू नहीं हुआ।
इनका उपयोग भविष्य में आवश्यकता पूरी करने के लिए हो सकता है।

संसाधनों का विकास → संसाधन प्रकृति की देन है। मानव ने संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग किया, जिससे निम्न समस्याएँ पैदा हुई —

(i) कुछ व्यक्तियों की लालच से संसाधनों का ह्रास।
(ii) कुछ लोगों के हाथ में संसाधन आए और कुछ को नहीं मिले, इससे समाज अमीर-गरीब में बँट गया।
(iii) संसाधनों के शोषण से ओजोन में छेद, Global warming और प्रदूषण हो रहा है।

सतत पोषणीय विकास — जब विकास होने के क्रम में पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे और भविष्य की जरूरतों की अनदेखी न हो तो ऐसे विकास को सतत पोषणीय विकास कहते हैं।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

PAGE NO.
DATE: / /

रियो सम्मेलन / पृथ्वी सम्मेलन
रियो डी जेनरो पृथ्वी सम्मेलन, 1992 —

संसाधनो के सही इस्तेमाल और सतत पोषणीय विकास के मुद्दे पर जून 1992 मे 100 से भी अधिक राष्ट्राध्यक्ष ब्राजील के शहर रियो डी जेनेरो मे प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी सम्मेलन मे एकत्रित हुए।

21वीं शताब्दी में सतत पोषणीय विकास के लिए एजेंडा 21 को स्वीकृत प्रदान की।

एजेंडा 21 —
इसका मुख्य मुद्दा था सतत पोषणीय विकास और संसाधन का सही ~~इस्तेमाल~~ इस्तेमाल।

एजेंडा21का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्रत्येक स्थानीय निकाय अपना स्थानीय एजेंडा 21 तैयार करें।

इस एजेंडा में समान हितों, पारस्परिक जरूरतों और सम्मिलित जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए विश्व सहयोग की बात की गई है ताकि पर्यावरण की क्षति, गरीबी और रोगों से मुकाबला किया जा सके।

www.notesdrive.com

संसाधन नियोजन—

(i) संसाधनो की पहचान करके, एक list बनाना, मानचित्र बनाना।
(ii) संसाधन विकास योजनाएँ लागू करने के लिए टेक्नोलोजी तैयार करना।
(iii) संसाधन विकास योजना और राष्ट्रीय विकास योजना में तालमेल बैठाना।
(iv) संसाधन तभी किसी देश का विकास कर सकते है, जब उस देश में Technology होगी।

संसाधन का संरक्षण क्यो जरूरी है —

संसाधन किसी भी तरह के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, परन्तु संसाधन का विवेकहीन उपयोग के कारण कई समस्याएँ जैसे - सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण समस्याएँ पैदा हो सकती है। पृथ्वी पर सतत बनाए रखने के लिए तथा इन समस्याओं के बचाव के लिए संसाधन का संरक्षण जरूरी है।

https://parikshasolutions.blogspot.com
www.notesdrive.com

भू- संसाधन — भूमि एक प्राकृतिक संसाधन है हम इसका उपयोग आर्थिक रूप से करते है।

भूमि एक सीमित संसाधन है।
पेड़ पौधे, वन्य जीवन, मानव जीवन, कृषि मे सब भूमि पर होते है।

भारत में भूमि संसाधन —

(1) लगभग 43% भू-क्षेत्र मैदान है जो कृषि और उद्योग के लिए सुविधाजनक है।

(2) लगभग 30% भू-क्षेत्र में पर्वत है। जो बारहमासी नदियों के प्रवाह को सुनिश्चित करते है। एवं पर्यटन विकास के अनुकूल है।

(3) लगभग 27% भू-क्षेत्र पठार है जिसमे खनिज ईंधन और वनों का अपार संचय कोष है।

https://parikshasolutions.blogspot.com

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

भूमि निम्नीकरण — कुछ मानव क्रियाओं जैसे - खनन कार्य, अत्यधिक पशुचारण, वनों वृक्षों की कटाई, अधिक सिंचाई आदि ने भूमि के निम्नीकरण में मुख्य भूमिका निभाई है।

भूमि निम्नीकरण रोकने के उपाय—

(1) पेड़ लगाना
(2) अति सिंचाई न करना
(3) अति पशुचारण न करना
(4) प्रदूषित जल न फेंकना
(5) खनन नियंत्रण

मृदा संसाधन — असंगठित पदार्थों से बनी पृथ्वी की ऊपरी परत को मृदा या मिट्टी कहते है।
यह अनेक प्रकार के खनिजों, पौधों और जीव-जन्तुओं के अवशेषों से बनी है।

भारत में मृदा को निम्न प्रकारों में बाँटा गया है—

(1) जलोढ़ मृदा — यह उत्तरीय मैदान में पाई जाती है।

(1) पूर्वी तटीय मैदान विशेषकर महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी के डेल्टे भी जलोढ़ मृदा से बने है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

(2) इसमें अधिक उपज होती है।

(3) जलोढ़ मृदा पोटाश, फास्फोरस और चूनायुक्त होती है।

(4) इसमें गन्ना, चावल, गेहूँ, अनाज और दलहन फसलों की खेती होती है।

जलोढ़ मृदा दो प्रकार की होती है —
पुराना जलोढ़ मृदा को बांगर या नया जलोढ़ मृदा को खादर कहते हैं।

खादर और बांगर भूमि (मृदा) में अन्तर —

खादर — (1) नवीन जलोढ़ मिट्टी को खादर कहते हैं।
(2) खादर मिट्टी बांगर से अधिक उपजाऊ होती है।
(3) खादर मिट्टी प्रायः चिकनी होती है।
(4) इसमें कैल्सियम नहीं होता है।

बांगर — (1) प्राचीन जलोढ़ मिट्टी को बांगर कहते हैं।
(2) बांगर मिट्टी कम उपजाऊ होती है।
(3) इसमें कंकड़ होते हैं।
(4) इसमें कैल्सियम कार्बोनेट होता है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

(2) काली मृदा — (i) यह मृदा काले रंग की होती है और इसे "रेंगर" मृदा कहते हैं।
(ii) इसमें कपास की खेती होती है। इसी लिए इसे काली कपास मृदा के नाम से भी जानते हैं।
(iii) ये मृदाएँ महाराष्ट्र, मालवा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और सौराष्ट्र में पाई जाती है।
(iv) यह मृदा बहुत महीन कणों से बनी होती है।
(v) इसमें मैग्नीशियम, कैल्सियम कार्बोनेट, पोटाश और चूना के तत्व होते हैं।
(vi) लावा से बनी होती है।

(3) लेटेराइट मृदा — (i) यह मृदा उच्च तापमान और अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में होती है।
(ii) ये मृदाएँ कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, उड़ीसा और म.प्र. में पाई जाती है।

(4) मरुस्थली मृदा — ये मृदायें पश्चिमी राजस्थान में पाई जाती है।
(ii) इसमें नमक की मात्रा अधिक होती है।
(iii) इस मृदा में जलवाष्प की दर अधिक होती है।
(iv) इस मृदा को सिंचाई द्वारा खेती के योग्य बनाया जाता है।

www.notesdrive.com

PAGE NO.
DATE: / /

मृदा अपरदन

(i) मृदा अपरदन के प्राकृतिक कारक: पवन, हिमनदी और जल मृदा अपरदन है।
(ii) मानवीय कारक जैसे- खनन कार्य, अति पशुचरण, अति सिंचाई और वृक्षों की कटाई आदि मृदा अपरदन हैं।

रोकने के उपाय —

(i) सीढ़ीदार खेती करना
(ii) पेड़ लगाकर
(iii) पट्टी कृषि

https://parikshasolutions.blogspot.com

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

(i) तीन राज्यो के नाम बताएँ काली मृदा पाई जाती है। इस पर मुख्य रूप से कौन सी फसल उगाई जाती है।

उ० - काली मृदा का रंग काला होता है। इन्हे रेगर मृदा भी कहते है।
ये मृदाएँ महाराष्ट्र, मालवा, सौराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठार पर पाई जाती है।
इसमें कपास की खेती के लिए उचित मानी जाती है।
इसे काली कपास मृदा के नाम से भी जानते है।

(ii) पूर्वी तट के नदी डेल्टाओ पर किस प्रकार की मृदा पाई जाती है। और इस मृदा की तीन विशेषताएँ बताइए।

Ans - पूर्वी तट के नदी डेल्टाओ पर जलोट मृदा पाई जाती है।

(1) जलोट मृदा बहुत उपजाऊ होती है।
(2) इस मृदा में पोटाश, फास्फोरस और चूना होता है।
(3) इसमें गन्ना, अनाज, गेहूँ, चावल आदि फसलों की खेती होती है।
(4) जलोढ मृदा में रेत, सिल्ट और मृत्तिका के अनुपात पाए जाते है।

www.notesdrive.com

https://parikshasolutions.blogspot.com

(iii) पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए क्या कदम उठाने चाहिए।

Ans- मृदा के कटाव और उसके बहाव की प्रक्रिया को मृदा अपरदन कहते है।

रोकथाम के उपाय —

(i) पर्वतीय ढालो पर सीढ़ीदार खेत बनाकर
(ii) पर्वतीय क्षेत्रों में पट्टी कृषि के द्वारा मृदा अपरदन को रोक सकते है।
(iii) समोच्च ~~जुताई~~ जुताई करके।
(iv) पर्वतीय ढालों पर बाँध बनाकर।

(iv) जैव और अजैव संसाधन क्या होते है उदाहरण

Ans- जैव संसाधन — वे संसाधन जिनकी प्राप्ति जीवमंडल से होती है। और जिनमें जीवन व्याप्त होता है जैव संसाधन कहलाते है।
उदा०- मनुष्य, वनस्पति जगत, पशुधन

अजैव संसाधन — वे सारे संसाधन जो निर्जीव वस्तुओं से बने हैं। अजैव संसाधन कहलाते है।
जैसे - चट्टानें और धातुएं।

www.notesdrive.com

PAGE NO.
DATE: / /

प्रौद्योगिक और आर्थिक विकास के कारण संसाधनो का अधिक उपभोग कैसे हुआ।

Ans- (i) आर्थिक विकास के कारण नगरीकरण तथा आधुनिकरण हुआ इससे संसाधनो की माँग में वृद्धि हुई।

(ii) प्रौद्योगिक विकास के कारण औद्योगीकरण हुआ जिससे प्राकृतिक संसाधनो का अधिक उपयोग होता है।

(iii) प्रौद्योगिक विकास ने आत्म निर्वाह कृषि को व्यापारिक कृषि में परिवर्तित कर दिया तथा इसके कारण मृदा का अधिक उपयोग हुआ है।

(iv) प्रौद्योगिक विकास ने खनन की प्रक्रिया में सुधार किया है।

https://parikshasolutions.blogspot.com

www.notesdrive.com

www.notesdrive.com